

राजस्थान की गर्म एवं शुष्क पारिस्थितिकी में बेलपत्र की उन्नत किस्में

रामकेश मीना, दीपक कुमार सरोलिया एवं रमाशंकर सिंह

भाकृअनुप-शुष्क बागवानी संस्थान बीछवाल, बीकानेर

राजस्थान हमारे देश के क्षेत्रफल विस्तार की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है यह देश के उत्तर पश्चिम भाग में स्थित है देश का लगभग 12 प्रतिशत क्षेत्रफल शुष्क एवं रेतीला है इस क्षेत्रफल का लगभग 60 प्रतिशत भू भाग पश्चिम राजस्थान के राज्य बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, श्री गंगानगर, चुरू, सीकर आदि मरु जिलों में पाया जाता है मरु प्रदेश की कठिन भौगोलिक एवं विषम जलवायु परिस्थितियों के चलते शुष्क क्षेत्रों के किसान संघर्षमय जीवन जीने को बाध्य है यहाँ गर्मियों में तापमान 50° सेन्टीग्रेड तक पहुँच जाता है साथ ही धूल भरी अंधियाँ जीवन को दुष्कर बना देती हैं

मानसून के दौरान मरुप्रदेश में बहुत कम तथा अनियमित वर्षा होती है जिसके कारण यहाँ के किसान की प्रमुख समस्या विषम भौगोलिक स्थिति और जलवायु से पार पाने की है। इस मरु प्रदेश की समस्याओं के समाधान का सबसे बेहतर उपाय है फल वृक्षारोपण जो शुष्क जलवायु के लिए उपयुक्त माने जाते हैं इस क्षेत्र की प्रमुख बागवानी फसलें खजूर, बेर, अनार एवं बेलपत्र को माना जाता है इन फसलों को

दूसरी फसलों की तुलना में कम जल की आवश्यकता होती है। इस मरुप्रदेश में बेल की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है बेलपत्र भारत के प्राचीन फलों में से एक है। बेल के लिये कहा गया है - “रोगान बिलति भिनन्ति इति बिल्व” अर्थात् जो रोगों का नाश करे वह बेल कहलाता है। बेल के जड़, छाल, पत्ते शाखा एवं फल औषधि रूप में मानव जीवन के लिये उपयोगी हैं। प्राचीन काल से बेल को ‘श्रीफल’ के नाम से जाना जाता है।

बेल विभिन्न प्रकार की बंजर भूमि (ऊसर, बीहड़, खादर, शुष्क एवं अर्धशुष्क) में उगाया जाने वाला एक पोषण (विटामिन-ए, बी.सी., खनिज तत्व, कार्बोहाइड्रेट) एवं औषधीय गुणों से भरपूर फल है। बेल की खेती की अपार सम्भावनाएँ हैं, क्योंकि यह एक बहुत ही सहनशील वृक्ष है। मई-जून की गर्मी के समय इसकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं, जिससे पौधों में शुष्क एवं अर्धशुष्क जलवायु को सहन करने की क्षमता बढ़ जाती है।

जलवायु: बेल एक उपोष्ण जलवायु का पौधा है, फिर भी इसे उष्ण जलवायु में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसकी खेती समुद्र तल से 1200 मीटर ऊँचाई तक

और 7-50 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तक की जा सकती है। फूल एवं फल के विकास के समय पर्याप्त वर्षा व नमी का होना आवश्यक है। इसके लिए शुष्क एवं गर्म वातावरण उपयुक्त होता है।

भूमी का चयन: बेलपत्र के पौधे को किसी तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है परन्तु बलुई दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है इसको उसर, बंजर, कंकरीली, खादर एवं बीहड़ एवं बीहड़ जमीन में बागवानी सुगमता से की जा सकती है लेकिन भूमी को जिप्सम एवं पाइराइट पौध रोपण से पहले उपचारित कर देना चाहिए। वैसे बेल के लिए 6-10 के मध्य पीएच वाली जमीन सबसे उपयुक्त मानी जाती है



बेल फल बागान

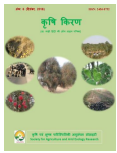
बेल की उपयुक्त किस्में जो राजस्थान के लिए उपयुक्त पायी जाती है उनका का विवरण नीचे किया गया है

नरेन्द्र बेल 5: इस किस्म के पौधे कम ऊँचाई वाले एवं काम फैलाव लिये होते हैं। इस किस्म के कलमी पौधे चार साल बाद फल

देने लग जाते हैं तथा छ वर्ष पुराने पौधे की औसत उपज लगभग 20 किलो तक प्राप्त की जा सकती है फलों का औसत वजन 0.8-1.0 किलो ग्राम तथा मध्यम आकर के होते हैं तथा फलों का छिलका पतला होता है। गूदे में रेशे और बीज की मात्रा काफी कम पायी जाती है। इसके ताजा फल का उपयोग किया जा सकता है पेड़ों से औसत उपज 20-25 किलोग्राम प्रति वृक्ष तक प्राप्त की जाती है।

नरेन्द्र बेल-9: इस किस्म के पौधे मध्यम उचाई एवं अधिक फैलाव तथा सघन कैनोपी वाले होते हैं यह असामयिक एवं अधिक उपज देने वाली किस्म है छ वर्ष पुराने पौधे से लगभग 35-40 किलो ग्राम तक उपज प्राप्त की जा सकती है इसके फल चपटे सिरे वाले मध्यम आकार एवं स्वाद में बहुत मीठे होते हैं। किस्म को लम्बे समय भंडारण करने पर भी गुणवत्ता में कोई कमी नहीं होती है इसके ताजा फल खाने में एवं मूल्य संवर्धित उत्पाद बनाने में उपयोग किया जा सकता है

नरेन्द्र बेल-7: इस किस्म के पौधे बहुत लम्बे एवं कम फैलाव तथा सघन कैनोपी वाले होते हैं इस किस्म में फलन कम एवं फल आकर बड़ा होता है फल की उपरी त्वचा चिकनी छिल्का मोटा एवं पीले रंग का होता है गूदे में रेशे और बीज की मात्रा काफी कम पायी जाती है। फल का स्वाद बहुत अच्छा होता है तथा इस किस्म को मूल्य संवर्धित उत्पाद



एवं प्रसंसकरण के लिए सबसे उपयुक्त किस्म मणी जाती है

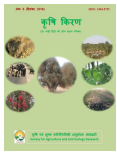
पंत अर्पणा: यह एक बौनी और विरल किस्म है, जिसकी शाखाएं नीचे की तरफ लटकती रहती है। पत्तियाँ बड़ी, गहरे रंग की और नाशपाती की तरह होती है। पेड़ों पर कांटे कम पाये जाते हैं तथा फल जल्दी और अच्छी उपज प्राप्त होती है। फल गोलाकार और 0.6 से 0.8 किलोग्राम औसत भार के और पतले छिलके वाले होते हैं। पकने पर फलों का रंग हल्का पीला हो जाता है। इसमें बीज, लिसलिसा पदार्थ, खटास व रेशा कम पाया जाता है। लिसलिसा पदार्थ व बीज अलग थैलियों में बंद होता है, जिसे आसानी से अलग किया जा सकता है। अतः यह किस्म परिरक्षण के लिए ज्यादा उपयुक्त सिद्ध हो सकती है। फलों का गूदा मध्यम मीठा (टीएसएस 35-40 ब्रिक्स), स्वादिष्ट और सुवासयुक्त होता है।

पंत शिवानी: यह एक जल्दी पकने वाली किस्म है इसके पौधे लम्बे एवं ऊपर की तरफ बढ़ने वाले तथा अधिक फैलाव लिये होते हैं। फल की भण्डारण क्षमता एवं गुणवत्ता बहुत अच्छी होती है फल चपटे, अंडाकार लम्बे, औसत वजन 1.2-2.0 किलोग्राम छिलका मध्यम पतला, गूदा अधिक, रेशा कम, अच्छी मिठास वाला और स्वादिष्ट होता है। पेड़ों की औसत उपज 25-35 किलोग्राम वृक्ष तक पायी जाती है।

पंत उर्वशी: इस किस्म के पेड़ घने और लम्बे होते हैं। यह एक मध्यम समय में पकने वाली किस्म है। फलों का आकार अंडाकार तथा प्रति फल भार 1.6 किलोग्राम तक होता है। छिलका मध्यम पतला, गूदा मीठा स्वादिष्ट और सुवासयुक्त होता है। फलों में गूदे की मात्रा 68.5 प्रतिशत और रेशे की मात्रा कम पायी जाती है।

पंत सुजाता: इस किस्म के पेड़ मध्यम आकार के घने और ऊपर फैलने वाले होते हैं। यह शीघ्र फल देने वाली और मध्यम समय में पकने वाली किस्म है। फल गोल लेकिन दोनों सिरे चपटे होते हैं। फलों का औसत भार 1.0-1.50 किलोग्राम, छिलका पतला और हल्के पीले रंग वाला, रेशा कम होता है। फलों में गूदे की मात्रा बहुत अच्छी पायी जाती है। पेड़ों की औसत उपज 45-50 किलोग्राम प्रति वृक्ष तक पायी जाती है।

सी.आई.एस.एच.बी.-1: इस किस्म के पौधे मध्यम ऊँचाई वाले कम फैलाव लिये होते हैं। फल, आकार में अंडाकार, लम्बाई 15-17 सेंमी. और व्यास 39-40 सेंमी. तथा अधिक मिठासयुक्त होते हैं। फलों का औसत वजन (0.8-1.2) तक पाया जाता है। फलों का छिलका पतला (0.10-0.12 सेंमी.) होता है। फलों में रेशे और बीज की मात्रा कम पायी जाती है और औसत उपज 50-60 किलोग्राम प्रति वृक्ष तक हो जाती है।



सी.आई.एस.एच.बी.2: इस किस्म के पौधे कम ऊँचाई वाले और कम फैलाव लिये होते हैं। फल, आकार में बड़े, लम्बाई तक पाया जाता है। फल अधिक मिठासयुक्त और पतले छिलके वाले होते हैं। फलों में रेशा और बीज की मात्रा काफी कम होती है। इस किस्म के पौधों की उपज 40-50 किलोग्राम वृक्ष तक पायी जाती है।

गोमा यशी: यह किस्म केंद्रीय शुष्क बागवानी केंद्र के उपकेन्द्र केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र से विकसित के गई है यह बेल की एक

बोनी किस्म है जिसकी लम्बाई लगभग 3.5 मीटर तक होती है इस किस्म के पौधे में कांटे नहीं होते हैं बौनी किस्म होने के कारण फल तोड़ने बहुत ही आसानी होती है तथा इसको सघन बागवानी के लिए बेल की सबसे उपयुक्त किस्म मानी जाती है जिसकी शाखाएं नीचे की तरफ लटकती रहती है। इस किस्म के गुदे का रंग सुनहरा होता है जिसकी विशेष प्रकार की सुवाश होती है